मोरंगे

जनवरी 2012

इस बार

खिड़की

3 एक छोटा बूढ़ा आदमी

कविताएँ

5 मेरा पेन / हाथी की मौज़ी

6 गिलहरी / कोशिश
खरगोश

कहानियाँ

7 दो पटेल

9 शेरनी की चप्पल

11 हनुमान की चालाकी
राजा को चिन्ता किस बात की

12 डरपोक

याद की धूप–छाँव में

13 टेलीविज़न

14 जब मैं मछली पकड़ने गया

बात लै चीत लै

15 सूखी रोटी

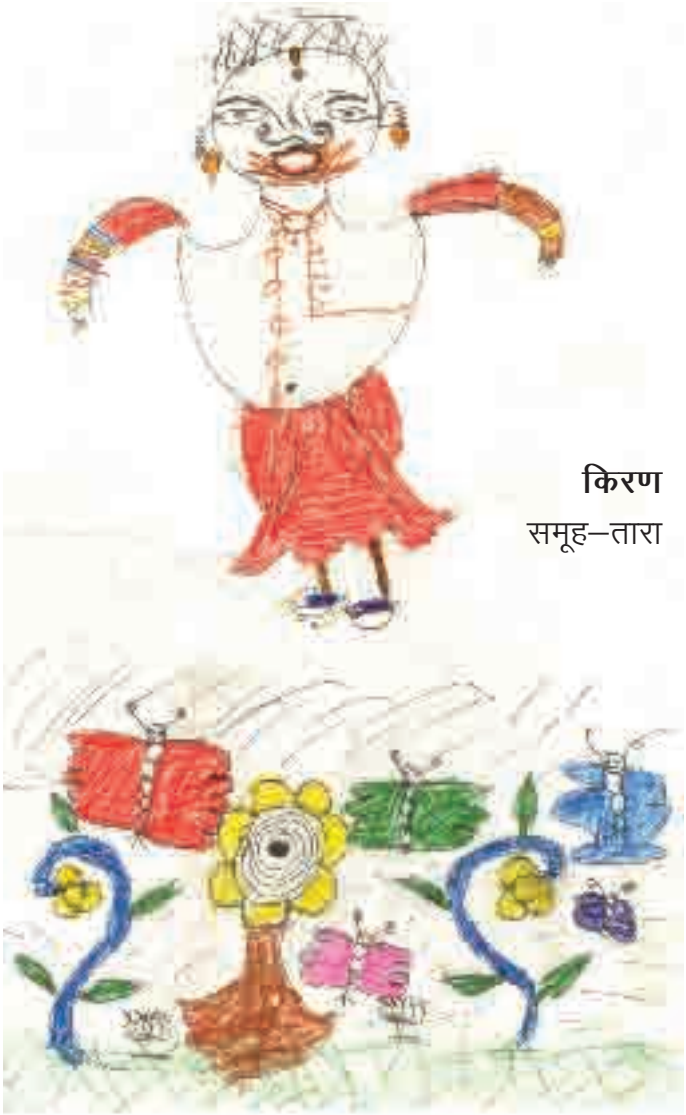

किरण
समूह–तारा

17 मटरगश्ती बड़ी सस्ती

कुछ हमने बढ़ायी
18 कुछ तुम बढ़ाओ

सहयोग : **विष्णु, भारती, गौरव, हरीश**

डिज़ाइन : **अश्विनी कुमार पंकज**

प्रूफ़ : **नरेश कुमार गौत्तम**

वितरण : **लोकेश राठौर**

आवरण पर चित्र :
निशा, रंगोली, 8 वर्ष

जनवरी 2012, वर्ष 3, अंक 31

'मोरंगे' का प्रकाशन 'यात्रा फाउण्डेशन', आस्ट्रेलिया के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन
मनीष पांडेय
सचिव,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
3/39, हाउसिंग बोर्ड,
सवाई माधोपुर, राजस्थान

खिड़की

एक छोटा बूढ़ा आदमी

विकास,
समूह–आसमान,
उम्र–5 वर्ष

एक बहुत छोटा और बूढ़ा आदमी था। वह समुद्र के बीचों–बीच टापू पर एक छोटे–से घर में रहता था। वह बिल्कुल अकेला रहता था। वह एक हँसमुख आदमी था। उसके सिर पर एक भी बाल नहीं बचा था। परंतु उसकी प्यारी–सी सफेद दाढ़ी थी। हर रोज़ सुबह नहाने के बाद साफ कपड़े पहनकर वह अपना नाश्ता बनाता था। वह सोचता कि अगर नाश्ते के समय कोई साथी होता तो कितना मज़ा आता। वह छोटा बूढ़ा आदमी बहुत मेहनती था। नाश्ते के बाद वह अपने घर के अंदर अच्छी तरह सफाई करता था। उसके बाद वह बाहर का काम करता। कई बार वह खुद अपने बाग में काम करता था। कभी–कभी वह अपने घर की छत की मरम्मत करता और कभी वह अपनी छोटी नाव में मछलियाँ पकड़ने के लिए जाता। वह मछलियों को तवे में तेल डालकर भूनता। परंतु बूढ़े आदमी से कोई बात करने वाला नहीं था, इसलिए वह कभी–कभी उदास हो जाता। उसे लगता कि अगर उसके पास एक बिल्ली होती तो कितना अच्छा होता। वह रात को नींद में बिल्लियों के सपने देखता। इसमें छोटी, मोटी, काली, सिलेटी सभी तरह की बिल्लियाँ होतीं। कभी–कभी उसे सपने में बिल्ली के छोटे बच्चे भी दिखाई देते। एक सुबह जब बूढ़ा आदमी सोकर उठा तो उसे छत पर तेज़ बारिश पड़ने की आवाज़ सुनाई दी। जब वह बाहर गया तो वहाँ तेज़ हवा के झौंके चल रहे थे और समुद्र में ऊँची–ऊँची लहरें उठ रही थीं। तभी एक बहुत ऊँची–सी लहर आई और वह बूढ़े आदमी के मकान को सीधे समुद्र में बहाकर ले गई। समुद्र में लहरें घर को इधर–उधर उछाल रही थीं। तेज़ आँधी घर को दूर बहा ले जा रही थी। कुछ देर बाद घर बूढ़े आदमी की आंखों से ओझल हो गया। दूरबीन से बूढ़े आदमी को दूर कुछ नज़र आया। क्या वह उसका घर हो सकता था?

नहीं। वह एक नाव थी। ताकतवर लहरें और हवा के झोंके नाव को टापू के किनारे ले आए, बिल्कुल उसी स्थान पर जहाँ कभी बूढ़े आदमी का घर था। जब तेज़ बारिश रूक गई और तेज़ रफ्तार की आँधी थम गई तो बूढ़े ने नाव के अंदर जाकर उसका मुआयना करने की सोची। उसने नाव का पहले तो बाहर से एक चक्कर लगाया। नाव काफी बड़ी थी, उसके पुराने घर से कहीं बड़ी। उसकी डेक पर एक छोटी–सी नाव थी, जो बूढ़े की मछली पकड़ने वाली नाव से कुछ छोटी थी। नाव के अंदर बूढ़े को बेडरूम दिखा। उसमें दोनों तरफ सोने के लिए पलंग

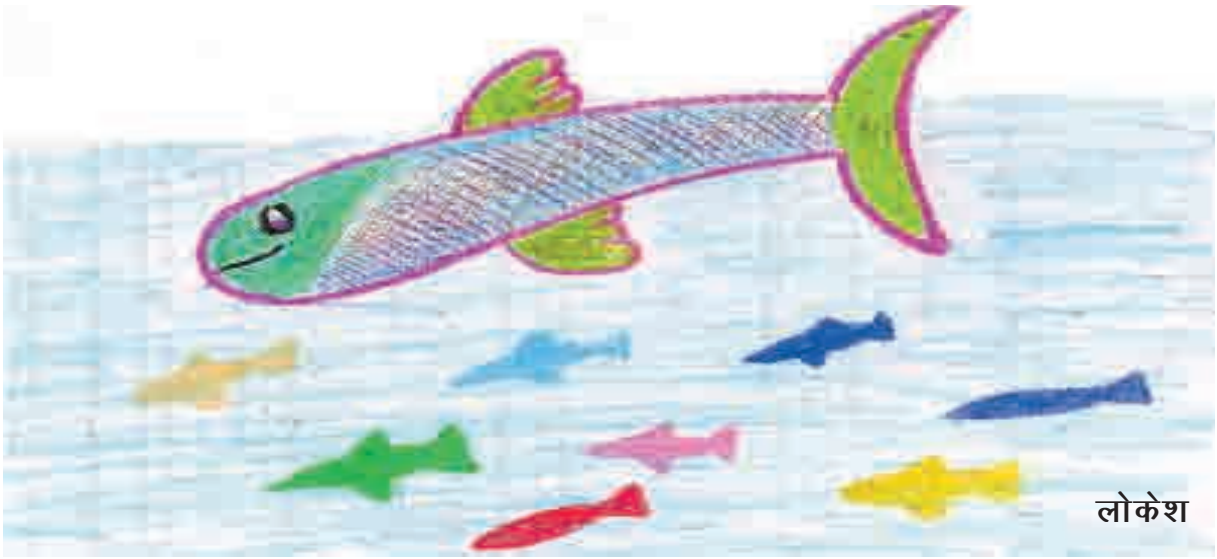

लोकेश

थे। रसोईघर भी सही–सलामत बहुत अच्छी हालत में था। बूढ़े ने घर का पूरी तरह मुआयना करने के बाद कहा ''अरे इसका कितना अच्छा घर बनेगा। मैं इसमें तब तक रहूंगा जब तक इसके असली मालिक नहीं आते।'' तभी बूढ़े आदमी को एक आवाज़ सुनाई पड़ी।

लोहे की बड़ी अंगीठी के नीचे से एक बिल्ली बाहर निकली! म्याउँ! म्याउँ! म्याउँ! म्याउँ! फिर अंगीठी में से धीरे–धीरे करके बिल्ली के चार बच्चे बाहर निकले। उन्हें देखकर बूढ़ा आदमी बेहद खुश हुआ। फिर बूढ़ा आदमी, बिल्ली और उसके चारों बच्चे साथ मिलकर नाव में रहने लगे। वे नाव को अंदर से साफ रखते। उन्होंने नाव को बाहर से अच्छा पेंट किया। सभी साथ मिलकर छोटी नाव में मछलियाँ पकड़ने जाते। फिर वे मछलियों को तवे पर भूनते। बहुत साल बीते, परंतु कभी भी कोई उस नाव को लेने नहीं आया। उसके बाद से बूढ़े आदमी को कभी भी अकेलापन महसूस नहीं हुआ और वह फिर कभी उदास नहीं हुआ।

नटाली नॉरटन

(यह कहानी भारती ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित जनवाचन पुस्तकमाला के तहत प्रकाशित इसी नाम की पुस्तक से साभार)

कविता

मेरा पेन

मेरा पेन है कितना सुन्दर
लिखता है कॉपी के अन्दर
बोला मुझसे लिखना सुंदर
मैं कहती हूँ चलना सुंदर
मैं लिखती हूँ कितना अच्छा
देखो मेरा प्यारा पैन।

नरेशी मीणा,
समूह–सागर

हाथी की मौज़ी

हाथी राजा कितना सुन्दर
उसके कितनी लम्बी सूंड
सूंड के ऊपर मुझे बैठा लो
थोड़ी सी दूर मौज़ी खिला दो
ऊपर से गिरा मत देना
गिर गई तो लग जायेगी
छाछ राबड़ी कढ़ जायेगी।

आरती मीना,
समूह–सागर, उम–13 वर्ष

मानवेन्द्र, समूह–रंगोली, उम्र–7 वर्ष

खरगोश

स्पीड़ देखो खरगोश की
कितनी लम्बी कितनी तगड़ी
खरगोश, खरगोश सब मिलकर रहते
देख शिकारी छिप जाता है
फिर निकल कर दौड़ लगाता
किसी के वश में नहीं आता है
पहाड़ों पर यह गुफा बनाता
सुबह उठकर दौड़ लगाता।

धर्मराज सैनी,
समूह–सागर, उम्र–12 वर्ष

कोशिश

सुबह–सुबह स्कूल में आते
खेल खेलते दौड़ लगाते
मैं रह जाती सबके पीछे
हर दिन रेस बदलती रहती
कभी बढ़ती कभी घटती
कभी–कभी साथ में आती
फिर भी नहीं निकली आगे
कोशिश करती रहती हूँ

रीना, समूह–सागर

विकास,
समूह–सितारे,
उम्र–7 वर्ष

गिलहरी

गिलहरी तू नहीं मानती
मक्का को तू नहीं छोड़ती
दाने तूझको देता हूँ
क्या उनमें नहीं धापती
परिण्डे में भरता पानी
खा–पी कर आराम कर
क्यों करती शैतानी
बिल्ली से अगर शिकायत कर दूगा
पूँछ काट लेगी तेरी
चूं चूं चूं चूं रोयेगी
बैठ डाल पर सोयेगी।

अनुप मीना,
समूह–सागर, उम्र–12 वर्ष

तनुज, समूह–महक

दो पटेल

एक बार दो पटेल रहते थे। वो दानों नज़दीकी के गाँव में ही रहते थे। वे दोनों बहुत अमीर थे। एक दिन दोनों पटेलों के लड़का लड़की हुआ। तो पटेल ने कहा कि ''हम दोनों पहले से दोस्त थे। अब तो हम समधी बन जायें।'' वे दोनों समधी बन गये। फिर बोदल वाले पटेल के गरीबी आ गई तो गाँव के लोगों ने कहा कि ''अब तो तेरे बेटे की औरत ले आ।'' पटेल चला गया। जाते–जाते वह गाँव में पहुँच गया। उसे शाम के सात बज गये तो घर पर ब्याई मिला। बोदल का पटेल ने उससे राम–राम किया। पर मोरडूंगरी का पटेल ने राम–राम नहीं किया और अपनी पटेलन से कहा कि ब्याई को रोटी खिला देना। पटेलन अपने बच्चों को रोटी खिलाकर सो गई पर बोदल के पटेल को रोटी नहीं खिलाई। फिर सुबह हुई तो मोरडूंगरी का पटेल ने घर में जाकर चाय पी ली पर बोदल का पटेल को चाय नहीं पिलाई। तो फिर पटेलन रोटी करके खेत पर ले गई और बच्चों से कह गई की ब्याई को खेत पर खंदा देना। ब्याई खेत पर चला गया तो मोरडूंगरी के पटेल ने कहा कि ''काई आंधो हो गियो कांई, खेत की देंगी तोड़ेगा।'' बोदल वाला पटेल समझ गया कि ब्याई अब रिश्ता नहीं रखना चाहता। इसलिए वापस अपने घर आने लगा। उसकी बहू उसके पहले नेज बाल्टी लेकर कुआ पर चली गई और ग्वालों से कहलवादी कि ''वो आदमी जा रहा है। उससे यह कह दे की पानी पीता जा।'' वो पानी पीने आ गया और एक घूंट पानी पीकर चला गया। फिर उसकी बहू उसके पीछे–पीछे चली गई। फिर पटेल ने कहा कि ''तेरा बाप लड़ेगा, तू मत आ।'' औरत ने सिर से मना कर दी और पीछे–पीछे चली गई। फिर घर आ गई, उसने घर की

काली मीणा, समूह–झील, उम्र–8 वर्ष

सफाई की और नेज बाल्टी लेकर कुआ से पानी भरकर लाई, आटा पीसा, राबड़ी बनाई और पाँच रोटी बनाई। उसने अपने पति से कहा कि ''तुम्हारे पिता से कह दो कि रोटी खा लें।'' फिर पति ने अपने पिता से कह दिया। फिर पिता ने रोटी खा ली। सुबह तीनों लकड़ी लेने गये। तीनों की लकड़ी से उन्होंने डेर सारा सामान खरीद लिया और घर का गुज़ारा कर लिया। एक दिन गाँव की औरतों के संग दोनों लकड़ी लेने गये। फिर औरत के पति ने एक छीले का पेड़ काटा वह अंदर से पोला था। उसमें एक सोने का हार पाया। औरत ने सोने के हार को अपने लूगड़ी के पल्लू में बाँधा और वे घर आ गये। घर पर औरत ने अपने पति से कहा कि ''आपके पिता से कह दो कि हमको सोने का एक हार पाया है, वे यह बात किसी से न कहें।'' इधर राजा ने सारे नगर में डिंडोरा पिटा दिया कि किसी को भी रानी का हार पाया हो तो बता दे। उसको इनाम दिया जायेगा। फिर यह खबर पटेल के घर पहुँच गई। उसकी बहू ने कहा ''ससुर जी, कल आप राजा के पास जायेंगे तो राजा से यह कहना कि अगर हार पा गया हो तो इनाम क्या होगी।'' फिर पटेल राजा के पास पहुँच गया और राजा को सारी बात बता दी। फिर राजा बोला कि ''जो तुम मांगोगे दे दूंगा।'' फिर पटेल घर गया और अपनी बहू से कहा कि राजा ने कहा है ''जो मांगोगे दे दूंगा।'' औरत ने कहा कि ''कल में जाऊंगी।'' सुबह हुई तो औरत सभा में गई और राजा से कहा कि ''मुझे कुछ नहीं चाहिए सिर्फ लक्ष्मी पूजन के दिन किसी भी घर में दीपक नहीं जलना चाहिए, सिर्फ मेरी झौपड़ी में ही दीपक जलना चाहिए।'' फिर दो चार दिन बाद लक्ष्मी पूजन आया और किसी भी घर में दीपक नहीं जला। बस झौपड़ी में ही दीपक जला। लक्ष्मी जी भटकती–भट. कती झौपड़ी में आई। फिर ससुर जी ने कहा कि घर मत आ। फिर उसकी बहू ने कहा कि तुझे यहाँ रहना है तो हमेशा के लिए रहना होगा। फिर लक्ष्मी जी बोली हमेशा के लिए तो मैं नहीं रह सकती। बहू बोली, तो फिर तुम्हे वचन देना होगा कि हमारे घर में कभी कोई चीज़ की कमी नहीं होगी। लक्ष्मी जी ने वचन दे दिया। उनकी झौपड़ी टूट कर रातों–रात महल खड़ा हो गया। एक दिन पटेल की बहू का बाप आया तो उसने गाँव वालों से पूछा कि मोतीलाल पटेल की झौपड़ी कहाँ है। फिर गाँव वालों ने कहा कि ''झौपड़ी नहीं महल कहो महल।'' फिर वो बाप महल के नज़दीक आया। उसकी बेटी ने कहा कि ''इस आदमी को लेकर आओ।'' नौकर चाकर उसको लेकर आ गये। उसे नहलाया और अच्छे कपड़े पहनाये फिर अपनी माँ और भाईयों के लिए खूब सारा सामान भेजा और दोनों पटेल पहले की तरह दोस्त बन गये।

विनोद प्रजापत, समूह–सूरज, उम्र–11 वर्ष

शेरनी की चप्पल

अकड़ैल शेरनी और दब्बू शेर की गृहस्थी बड़े मजे से चल रही थी। वैसे तो उनमें घर में किसी बात की कमी न थी पर शेरनी के शौक भी कम न थे। वह रोज़ किसी न किसी सामान की मांग शेर जी से कर ही देती थी। शेर को उसकी हर मांग पूरी करनी ही पड़ती थी, क्योंकि मना करना उसके वश में न था।

शेरनी ने एक दिन स्वयं के लिए नई चप्पलों की मांग रखी। बोली कि आजकल गर्मी बहुत पड़ने लगी है। ऐसे में जूते तो पहने नहीं जाते। आप मेरे लिए आज ही अच्छी सी सैण्डिल लेकर आओ।

मनराज गुर्जर,
समूह–सूरज

इतना सुनते ही शेर जी चल पड़े सैण्डिल खरीदने। सोचते जा रहे थे कि आखिर कैसी सैण्डिल पसन्द होगी उसे। ऊँची एड़ी की या सादा, चमड़े की या ना. ईलोन की, बाँधने वाली या स्लीपर। रंग पसंद करना तो और भी टेड़ी खीर है। रंग पसंद नहीं आने के चक्कर में तो एक साड़ी को ही दस बार बदलवाना पड़ा था। खैर, जो होगा सो देखा जायेगा। इसी उधेड़बुन में वह एक सूखे नाले में चला जा रहा था। उसी नाले में डब्बू शौच कर रहा था और शिब्बू झाड़ियों में बेर खा रहा था। तभी एक टिटहरी के टीं–टीं करने की आवाज़ डब्बू के कानों में पड़ी। आवाज़ सुनते ही डब्बू चौंका। उसे लोगों की कही हुई बात याद आई कि जब जंगल में

टिटहरी टिटयाती है तो वहाँ जंगली जानवर होने का अंदेशा होता है। उसने बैठे–बैठे ही पीछे मुड़कर देखा तो आँखें फटी की फटी रह गई। दब्बू शेर सीधा उसकी ओर ही आ रहा था। वह पेन्ट पकड़कर भागा और शिब्बू को आवाज़ दी। शिब्बू, भाग, भाई साहब (शेर) आ रहा है। शिब्बू बोला ''पहले तू तो आ।'' वह बोला ''मैं तो आ रहा हूँ, तू भी भाग।'' दोनों जोर से भागे। इसी दौरान डब्बू की एक पैर की चप्पल भी नाले में रह गई। वह चप्पल की परवाह किये बिना ही हाथ से पेंन्ट पकड़े भागता रहा। इनका भागना तब रूका जब वो गाँव के बाहर बनी एक स्कूल की दीवार पर चढ़ गये। वहाँ चढने के बाद डब्बू बोला ''अरे यार शिब्बू मेरी तो एक चप्पल नाले में ही छूट गई।'' शिब्बू बोला ''उसे तो सुबह ले आयेंगे।'' इधर दब्बू शेर जी अपनी मस्ती में चले आ रहे थे। उन्हें क्या परवाह थी। लेकिन एक झाड़ी की ओट में खड़ा होकर उन दोनों की बातें सुनी। इससे उसके मन में विचार आया कि क्यों न इनकी चप्पल को ले जाकर ही अकड़ैल शेरनी को दे दिया जाये। यदि उसे पसन्द आई तो कल ऐसी चप्पल लाकर दे देंगे। चप्पल लेकर वह झाड़ी की ओट से बाहर निकलकर आगे बढ़ा। डब्बू और शिब्बू ने यह देखा तो दीवार से कूदकर भाग गये। दब्बू शेर ने वह चप्पल उठाई और पत्नी को ले जाकर दिखाया।

धर्मराज, समूह–सागर, उम्र–12 वर्ष

यह देखकर अखड़ैल शेरनी का गुस्सा सातवें आसमान पर चढ गया। वह आग बबूला हो गई और बोली कि ''मेरे लिए केवल एक चप्पल लेकर आये हो।'' दब्बू शेर बोला ''अरे नहीं प्यारी, यह तो आपको दिखाने के लिए लाया हूँ। यदि आपको पसंद हो तो कल आपके लिए ऐसी ही नई लाकर दूंगा।'' ''हाँ–हाँ मुझे तो ऐसी ही चप्पलें चाहिए।'' दब्बू शेर बोला कि ''ठीक है कल आपके लिए ऐसी चप्पलें आयेंगी।''

वेणी प्रसाद शर्मा, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

हनुमान की चालाकी

एक गाँव में एक आदमी रहता था। उसका नाम हनुमान था। हनुमान रोज़ाना बकरी चराने जाता था। एक दिन हनुमान बकरी चराने गया तो उसकी सारी बकरियाँ शेर खा गया। उसने एक बकरी की खाल पहनी और दूसरे बकरी वाले के पास चला गया। उस आदमी ने सोचा कि यह अपनी बकरी है। फिर उसे अपने घर ले गया। उस बकरी वाले के रूपये गिर गये थे जो हनुमान ने ले लिये। उस बकरी वाले ने दस बकरी बेच दी। उन रूपये को उसने मटके में रखकर ज़मीन में गाड़ दिया। हनुमान को पता था कि रूपये कहाँ पर गाड़े हैं। हनुमान जाकर रूपये निकाल लाया और उस मटके में पत्थर भर दिये। उस बकरी वाले ने उस मटके को देखा तो उसमें पत्थर निकले। रूपये लेकर हनुमान वहाँ से चला गया। उन रूपयों से उसने बकरियाँ खरीदी और रोज़ाना बकरियाँ चराने जंगल में जाने लगा।

लोकेन्द्र, समूह–झील, उम्र–11 वर्ष

राजा को चिन्ता किस बात की

एक राजा था। उसका कोई मित्र नहीं था। राजा ने सोचा कि मुझे किसी को मित्र बनाना होगा। यह सोचकर राजा वहाँ से अपना घोड़ा लेकर गाँव की तरफ चल पड़ा। गाँव में पहुँचते ही गाँव वाले बड़े खुश हुए कि आज तो हमारे गाँव में महाराज पधारे हैं। उस गाँव में सिर्फ एक ही लड़का था। उसका नाम रामसिंह था। वह सीधा–साधा और भोला–भाला था। वह किसी के चोरी नहीं करता और जो भी पैसे कमाता उससे अपना गुज़ारा कर लेता था। राजा ने सोचा कि मुझे तो ऐसे ही मित्र की ज़रूरत है। राजा ने उस लड़के से बातचीत की। लड़का बड़ा खुश हुआ। राजा अपने घोड़े पर बिठाकर उसे राजमहल में ले गया। वे वहाँ बहुत खुशी से रहने लगे। अब राजा को किसी भी बात की चिन्ता नहीं थी।

रोहितराज, समूह–झील

डरपोक

सोनू
समूह–महक
उम्र–7 वर्ष

एक गप्पू नाम का लड़का था। वह बहुत शरारती था। वह रोज़ जंगल में जाता था। एक दिन जंगल में उसे शेर मिल गया। उसने सोचा मैं तो आज शेर पर बैठकर सैर करूंगा। वह शेर पर बैठा और शेर के सड़ाके मारने लगा। शेर इतनी जोर से भागा कि वह लड़का थर–थर हिलने लगा। तभी आगे जाकर रास्ते में एक बड़ का पेड़ आया। शेर उस पेड़ के नीचे से होकर निकल रहा था। उस बड़ के तांतु नीचे लटक रहे थे। लड़का तांतु पकड़कर बड़ पर चढ़ गया। शेर ने सोचा कुछ वजन कम तो हुआ लेकिन वजन के साथ सड़ाके पड़ना भी बंद हो गये। शेर इतनी जोर से भाग रहा था कि पैर ज़मीन पर टिक ही नहीं रहे थे। शेर को आगे एक सियार मिला। सियार ने शेर से पूछा कि ''शेर–शेर आज इतना तेज़ क्यों भाग रहे हो?'' शेर ने उसे पूरी बात बतायी कि ''रास्ते में मेरे ऊपर पता नहीं कौन बैठ गया और वह बड़ के पेड़ के नीचे उतरकर भाग गया।'' सियार शेर से बोला कि ''चलो देखें, कौनसे बड़ के नीचे से वह आपके ऊपर से उतर गया।'' वे दोनों बड़ के नीचे पहुँचे तो उनको कुछ भी दिखाई नहीं दिया। सियार ने सोचा कि शेर तो डरपोक है। यह ख़बर सब जानवरों के पास पहुँची। सभी जानवर शेर को डरपोक कहने लगे। शेर उनकी बात नहीं सुन पाता क्योंकि उसे बुरा लगता। वह दूसरे जंगल में जाकर रहने लगा। उस जंगल के सारे जानवर शेर से डरते थे। शेर ने जंगल के जानवरों से कहा कि ''डरो मत, मैं तुम्हें नहीं मारूंगा।'' जंगल के सारे जानवर शेर के पास आये और बोले ''हम आज यहाँ गुफा बनायेंगे और सारे गुफा में बैठेंगे। आज से ही हमारी दोस्ती आपसे हो गई।'' शेर खुद के मन में खुश हो रहा था। उस जंगल के सारे ज़ानवर मिल जुलकर रहने लगे।

रामहरी सैनी, समूह–सागर, उम्र–12 वर्ष

टेलीविज़न

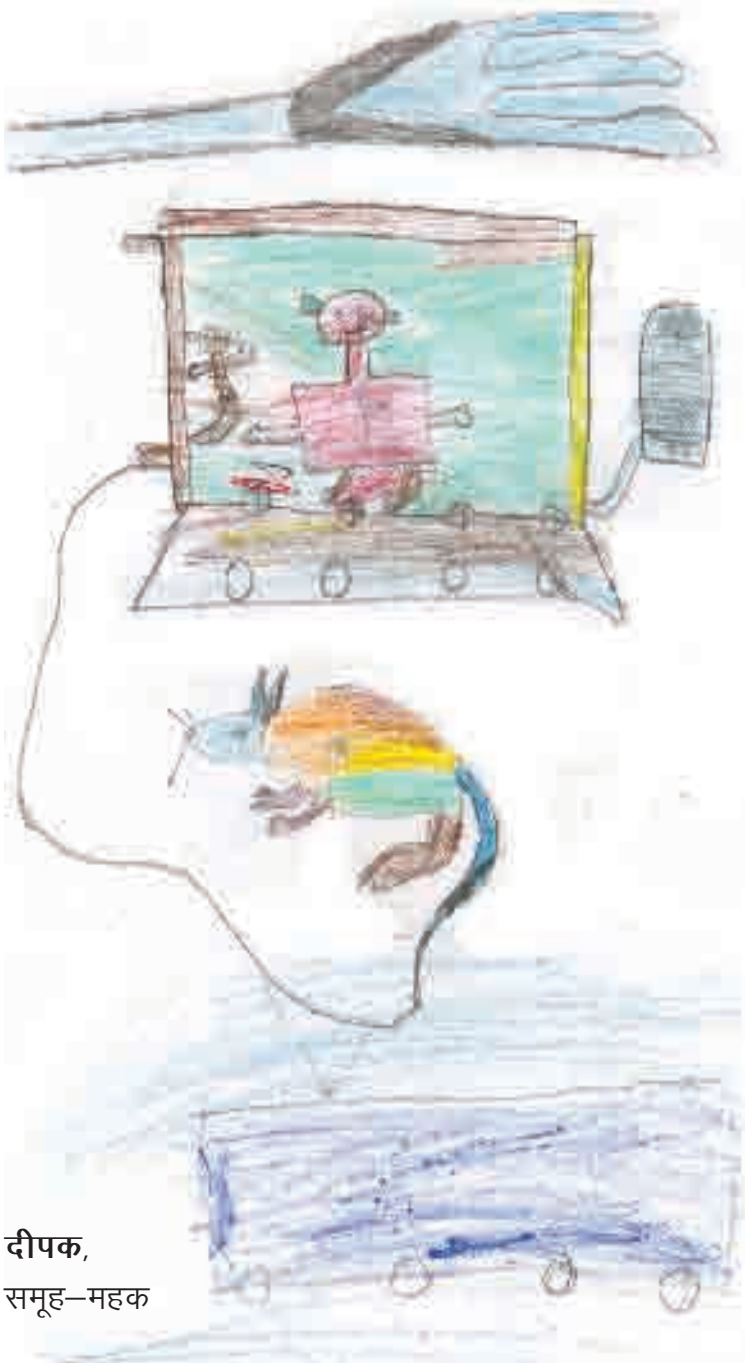

दीपक,
समूह–महक

मेरे घर में टीवी नहीं है। हमारे पापा हमें टीवी देखने से मना करते हैं। परन्तु हमें टीवी देखना बहुत पसन्द है। इस लिए हम बिना पूछे बिना बताए दूसरों के घर टीवी देखने चले जाते। एक दिन में टीवी देखने गई तो पीछे से घर पर मेरा पापा आ गया। मेरे पापा ने मम्मी से कहा कि, ''बालक कहाँ गये हैं?'' मेरी मम्मी ने कहा कि ''वे दोनों टीवी देखने गये हा. गे।'' फिर मेरे पापा हमें हेरने गये तो मेरे पापा हमें सारे गाँव में हेर आये। हम पापा को नहीं मिले। फिर हम टीवी देखकर वापस आये तो मेरे पापा ने कहा कि ''कहाँ गये थे?'' मैं कुछ नहीं बोली तो मेरे पापा ने कहा अब क्यों नहीं बोल रहे हो? फिर मेरे भाई ने कहा कि हम तो टीवी देखने गये थे। मेरे पापा ने हमें मारा। हम भूखे ही सो गये फिर मेरे पापा ने कहा ''भूखी सो रही हो, उठ खाना खा ले।'' फिर मैंने खाना नहीं खाया तो मेरी मम्मी बोली ''तुमने क्यों मारी, अब वह खाना नहीं खायेगी।'' फिर मेरे पापा को बहुत दुःख हुआ। मेरे पापा ने प्यार से खाना खिलाया फिर मैंने खाना खा लिया।

रीना गुर्जर, समूह–गुलशन, उम्र–9 वर्ष

जब मैं मछली पकड़ने गया

हेमा सैनी,
समूह–झील, उम्र–8 वर्ष

यह बात लगभग 15 वर्ष पहले की बरसात के दिनों की है। बरसात ज़्यादा तेज़ होने के कारण गड्डों व नालों में पानी ऊपर तक बहने लग गया था। हमारे मौहल्ले में बिहार का एक पहलवान रहता था। मैं उसके साथ मछली पकड़ने चला गया। हम तीन जने थे। मेरा साथी भी साथ था। पहलवान पानी की लहरों की हलचल से पहचान कर लेता था, कि मछली आ रही है। वे 4–5 बड़ी मछलियों को मारकर एक बड़े कट्टे में डालकर मुझे निगरानी पर रख गये। मैंने उसमें से एक बड़ी मछली को खूब पीटा। जब वह आया तो पूछा कि ''एक मछली कहाँ है?'' मैंने उसे वह मछली दिखाई। वह मछली घर लाने जैसी नहीं थी। उसे इस बात पर बहुत गुस्सा आया और मुझे पीटकर भगा दिया। घर पर इस बात का पता चल चुका था, कि तुम्हारा लड़का आज सुबह से पहलवान के साथ मछली पकड़ने गया है। तो वो भी नाराज़ थे। जैसे ही मैं मौका देखकर घर में घुसने लगा कि मुझसे पूछा ''कहाँ से आ रहा है?'' मैं रोने लगा और रोते हुए कहने लगा कि वो मेरा साथी उसके साथ ज़बरदस्ती ले गया, कि वह हमें मछली देगा। इस पर घर वालों ने मुझे और मारा और हाथ पैर बाँधकर मुझे घर पर छोड़ दिया। दो–तीन घन्टे बाँधे रखा। इसके बाद मुझे मेरी भाभी ने चुपचाव आकर खोला और कहा कि किसी को बताना नहीं। अपने भैया को तो कतई नहीं बताना। इसके बाद मुझे बहुत देर तक सिसकियाँ आती रहीं। मैं सो गया। मुझे खाने के लिए भी मना किया था। मुझे भाभी ने जगाकर खाना खिलाया और मैं उसके बाद से कभी मछली पकड़ने नहीं गया।

सुरेश चन्द, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

बात लै चीत लै

चतुर बुढ़िया

लीला, समूह–चांद

एक समय की बात है। राजा भोज और माघ पण्डित सैर करने गए। लौटते समय वे रास्ता भूल गये। दोनों विचार करने लगे ''रास्ता भूल गए, अब किससे पूछे।'' तब माघ पंडित ने निवेदन किया ''पास में जो बुढ़िया गेहूँ के खेत की रखवाली कर रही है, उससे पूछें।''

दोनों बुढ़िया के पास गए और कहा राम–राम माँ जी यह रास्ता कहाँ जायेगा?''

बुढ़िया ने उत्तर दिया ''यह रास्ता तो यहीं रहेगा इसके ऊपर चलने वाले ही जायेंगे। भाई तुम कौन हो?''

''बहन हम तो पथिक हैं।'' राजा बोला।

बुढ़िया बोली ''पथिक तो दो हैं। – एक तो सूरज़ दूसरा चन्द्रमा। तुम कौन से पथिक हो?''

भोज बोला ''हम तो राजा है।''

''राजा दो है। – एक इन्द्र दूसरा यमराज। तुम कौन से राजा हो?'' बुढ़िया बोली।

''बहन हम तो क्षमतावान हैं।'' माघ बोला

''क्षमतावान दो हैं। – एक पृथ्वी दूसरी स्त्री, भाई तुम कौन हो?'' बुढ़िया ने कहा।

''हम तो साधु हैं।'' राजा भोज कहने लगा।

''साधु दो है। – एक तो शनि और दूसरा सन्तोष। तुम कौन से हो?'' बुढ़िया ने पूछा।

''बहन हम तो परदेशी हैं।'' दोनों बोले।

''परदेशी तो दो हैं। – एक तो जीव और दूसरा पेड़ का पात। तुम कौन हो?'' बुढ़िया बोली।

''हम तो गरीब है।'' माध पण्डित कहने लगा।

''गरीब भी दो हैं। – एक तो बकरी का जाया बकरा और दूसरी लड़की'' बुढ़िया कहने लगी।

''बहन हम तो चतुर हैं।'' माघ पण्डित बोला।

''चतुर तो दो हैं। – एक अन्न और दूसरा पानी। तुम कौन हो भाई सच बताओ'' बुढ़िया ने पूछा।

इस पर दोनों बोले ''हम कुछ भी नहीं जानते। ज़ानकार तो तुम ही हो।''

तब बुढ़िया बोली ''तू राजा भोज है और यह माघ पण्डित है। जाओ यही उज्जैन का रास्ता है।

(लोककथा)

नीतू, समूह–झील

भाषा की सहेलियाँ

बूझो यार पहेलियाँ

(1) दादा, पोता, बेटा तीनों की कुल आयु 120 वर्ष है। दादा जितने वर्ष का है पोता उतने ही महीने का है। पोता जितने दिन का है बेटा (पोते का पिता) उतने सप्ताह का है। तीनों की आयु बताओ?

(2) एक समूह में कुछ बच्चे हैं। यदि आधे बच्चे खेलने गये तो समूह में जो बच्चे हैं उनमें से भी आधे दूसरे समूह में चले गये। अब जो बच्चे बचे हैं उतने ही तीन बार और आ जाये तो पहले जितने बच्चे थे उतने ही हो जाते हैं। तो बताओ शुरू में कितने बच्चे थे?

मैना गुप्ता, शिक्षिका

हीहीही-ठीठीठी

रेडियो

मनगर,
समूह–तारा

एक बार एक गाँव में एक किसान रहता था। उसका बेटा शहर में रहता था। दीपावली पर उसका बेटा किसान के लिए रेडियो लेकर आता है। रेडियो पाकर उसका पिता बहुत खुश होता है। बेटा रेडियो में गानें चलाकर गाँव में मिलने चला जाता है। रेडियो में गानें बज रहे थे, लेकिन किसान को रेडियो चलाने, बंद करने के बारे में पता नहीं था। थोड़ी देर बाद रेडियो में गाने बजना बंद हो गये और खर्र–खर्र की आवाज आने लगी। तब किसान ने सोचा कि यह तो खराब हो गया है। किसान ने एक डण्डा लिया और रेडियो के दे मारी। रेडियो टूट गया और सेल बाहर निकल आये। यह देखकर किसान बोला कि ''लट्ठ पड़ते ही बजाबाड़ा तो भाग गया और ढोलका–ढोलकी यहीं छोड़ गया।''

हरीश तिवारी, शिक्षक, उदय पाठशाला सवाई माधोपुर

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

हेमा, समूह–झील, उम्र–8 वर्ष

धीरे–धीरे आया पतझड़
पत्ते गिरे भड़ भड़ भड़

दिलराज, *समूह–दीप, द्वारा शुरू की गई कविता को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

रेनी,
समूह–रंगोली,
उम्र–7 वर्ष

दो दोस्तों को जंगल में रात हो गई। उन्होंने फ़ैसला किया कि हम रात में यहाँ पर ही सोयेंगे। वे एक पेड़ के ऊपर चढ़ गये और सो गये। उन दोनों को रात में सपना आया। एक ने सपने में देखा कि मेरी पत्नी मेरे लिए रोटी लेकर आ रही है तो वह उठकर पेड़ पर चलने लगा तो पेड़ से गिर गया। उसने अपने दोस्त से कहा ''यार मेरी पत्नी कैसी है?, मुझे खाट से नीचे फेंक दिया।'' दूसरे को भी सपना आ रहा था। उसने कहा ''यार चुप रै मेरे लिए मेरी पत्नी .....

मनीषा मीणा, समूह–झील, उम्र–10 वर्ष

रामवीर, *समूह–झील द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

पहेलियों के ज़वाब –

1– दादा की 72 वर्ष, पोता 72 महिने, पिता 2160 सप्ताह 2– 8

जीतू प्रजापत, उम्र–9 वर्ष, समूह–सूरज